Raga of the Month December 2021 Todi ke Prakar

तोड़ी के प्रकार

उत्तर हिंदुस्तानी संगीत में राग तोड़ी एक लोकप्रिय राग है। आज के प्रचलित तोड़ी रागमें रे,ग, ध कोमल, मध्यम तीव्र और निषाद शुद्ध लगते है। मगर पुराने ग्रंथों में हनुमतोड़ी इस मेलकर्ता का वर्णन है। उसमें रे,ग, ध, नि कोमल और मध्यम शुद्ध लगता है; जो आज के भैरवी थाटसे मिलता-जुलता है। राग तोड़ी का आज का स्वरूप कब और कैसे प्रचार में आया इसका स्पष्टीकरण ग्रंथों में उपलब्ध नहीं है। ऐसा कहा जाता है की मियां तानसेन ने पुरानी तोड़ी में शुद्ध मध्यम की जगह तीव्र मध्यम और कोमल निषाद की जगह शुद्ध निषाद का प्रयोग करके नया राग निर्माण किया। शायद इसी कारणसे उसका आज का स्वरूप मियाकी तोड़ी, दरबारी तोड़ी, शुद्ध तोड़ी या केवल तोड़ी इन नामों से पहचाना जाता है। २०१८ साल में पंडित भातखंडे द्वारा दिल्ली में आयोजित ऑल इंडिया म्यूजिक कॉन्फ्रेंस में उपस्थित विद्वान तथा प्रसिद्ध गायकों के समक्ष यह निर्णय हुआ की राग शुद्ध तोड़ी, दरबारी तोड़ी और मियांकी तोड़ी ये सब प्रचलित तोड़ी के ही नाम है। पुराने ग्रंथोंमें प्रचलित तोड़ी का स्वरुप वराळी, वराटी या शुभपंतुवराळी नाम से पहचाना जाता है।

पंडित भातखंडे जी ने हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में तोड़ी के १८ प्रकारों के नाम दिए हैं :

तीव्र मध्यम और शुद्ध निषाद युक्त- तोड़ी (मियांकी तोड़ी, दरबारी तोड़ी, शुद्ध तोड़ी) , गुजरी तोड़ी ;

(पंडित भातखंडे जी ने बहादुरी तोड़ीका तीव्र मध्यम और शुद्ध निषाद युक्त स्वरुप का वर्णन किया है, मगर उसके प्रचलित स्वरुपमें शुद्ध मध्यम और कोमल निषादका प्रयोग होता है)

मध्यम वर्जित- भूपाल तोड़ी;

कोमल निषाद और शुद्ध मध्यम से युक्त- भैरवी थाटमें समाविष्ट -आसावरी तोड़ी (कोमल रिषभ आसावरी), बिलासखानी तोड़ी, **आसावरी थाटमें समाविष्ट**- लाचारी तोड़ी, लक्ष्मी तोड़ी, अंजनी तोड़ी, देसीतोड़ी, जौनपुरी, गांधारी तोड़ी, खट तोड़ी

मिश्र राग - हुसैनी तोड़ी, अहीरी तोड़ी, मुद्रा तोड़ी, फिरोज खानी तोड़ी, बरारी तोड़ी, बहादुरी तोड़ी

कोमल निषाद और शुद्ध मध्यम का जिन रागोंमे प्रयोग होता है उनमेंसे कई राग भैरवी थाट में और कुछ आसावरी थाटके अंतर्गत आते हैं। उन रागोंको आसावरी थाटमें रखने का कारण उनका साधारण चलन आसावरीके समान है।

तीव्र मध्यम की तोड़ी प्रकारों में <u>रे</u> <u>ग</u> <u>रे</u> सा स्वरसमूह महत्व रखता है - आरोह करते समय रिषभसे गंधारको खींचना चाहिए <u>ग</u> <u>रे</u> <u>ग</u> <u>रे</u> सा (मींडके साथ); तोड़ीमे गंधार का लगाव विलक्षण है, जिसका नमूना हम ऑडिओमे पंडित के जी गिंडेजीसे सुन सकते है. मगर बाकी तोड़ी प्रकारोंकी स्वर संगतियां अलग अलग रहती है; इसी कारण तोड़ी का कोई खास अंग माना जाता नहीं।

राग तोडीका स्वरुप हम इस प्रकार समझ सकते है- वादी कोमल धैवत, संवादी कोमल गंधार , आरोहमे पंचम दुर्बल, अवरोह सम्पूर्ण, गानसमय दिनका दूसरा प्रहर , <u>ग</u> ,प,<u>ध</u> पर न्यास, प्रकृति गंभीर. तोड़ी एक संपूर्ण जातिका राग है। स्वर वाक्य <u>नि</u> सा <u>रे</u> <u>ग</u> <u>रे</u> सा और उसका संवाद मं प <u>ध</u> नि <u>ध</u> प एक राग वाचक स्वर समूह है।

आरोह- सा <u>रे</u> <u>ग</u>, मं प, <u>ध</u> नि सां ; **अवरोह** - सां नि <u>ध</u>, प, मं <u>ग</u>, <u>रे</u> सा .

राग तोडीके विशेष स्वर समूह - सा रे॒ ग॒ , मं ग॒ रे॒ ग॒, मं प ध॒ मं ग॒ , सा रे॒ ग॒ मं ध॒ , नि ध॒ प, मं ध॒ नि ध॒ , मं ध॒ नि सां, ध॒ नि रें॒ सां , सां नि ध॒ ध॒ प, मं ध॒ मं ग॒, मं रे॒ ग॒, रे॒ ग॒ रे॒ रे॒ सा; ध॒ ग॒ और नि मं संगति महत्वपूर्ण ;

आजके ऑडियो में हम पंडित के जी गिंडेजीसे तोड़ी और गुजरी तोड़ी इन रागोंकी विशेषताएँ और वैशिष्ट्यपूर्ण बंदिशे सुनेंगे।

आभार- "रागांग राग विवेचन "- पंडित यशवंत महाले , श्री अजय गिंडे, अभिनव गीतांजलि (भाग ४) - पंडित रामाश्रेय झा ,

०१ -१२- २०२१

Link to the list of 120+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx